रिकॉड़ः— छोड़ भी दे आकाश सिंघासन.... ओम शान्ति प्रातः क्लास 16-2-67

भक्तों नें यहगीत बनाया है। अब इसका अर्थ कितना अच्छा है। कहते हैं आकाश सिंघासन छोड़ कर आओ। भक्तों को तो पता नही कि आकाश क्या है। ब्रहम तत्व क्या है वो है सारा भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग का अक्षर भी नही जानते। सभी है भक्त। भक्तों को कहा जाता है दुर्गती को पहुँचे हुये। अब आकाश तो है यह। यह है रुहों का स्थान। अब आकाश से तो कोई चीज आती नही है। आकाश सिंघासन कहते है। आकाश तत्व मे तो तुम रहते हो। और आत्मायें रहती है महतत्व मे। इसको ब्रहम वा महातत्व कहते है। जहां आत्मायें निवास करती हैं। आवेंगें भी जरूर वहां से। कोई तो आवेंगें नां। कहते है आकर हमारी ज्योती जगाओं। गायन भी एक है अन्धे की औलाद अन्धे, और दूसरे है सजे की औलाद सजे। धृतराष्ट्र और युधिष्ठर नाम रखते है। अब यह तो औलाद है रावण की। माया रूपी रावण है नां। सब की रावण बुधी है। अब तुम हो ईश्वरिय बुधी। बाप तुम्हारी बुधी का अब ताला खोल रहे है। रावण ताला बन्द कर देते है। कोई की बात को नही समझते है तो कहते है यह तो पत्थर बुधी है। बाप आकर यहां ज्योत जगावेगें नां। प्रेरणा से थोड़ेई काम होता है। आत्मा जो सतोप्रधान थी उनकी ताकत अब कम हो गई है। जड़, जनावर बन पड़े है। मरते है तो उनका दीवा जलाते है। अब दीवा क्यूं जगाते है? समझते है ज्योत बुझ जाने से अन्धेरा नां हो जावें इसलिये ज्योत जगाते है। अब यहां की ज्योत जगाने से वहां कैसे सोझरा होगा? इसको कहा जाता है नानसैन्स बुधी। अभी तुम सैनसीबुल बनते हो। माया नें नानसैनस बनाया है। तुम जानते हो हम मूर्ख तुच्छ बुधी थे। रावण नें बिलकुल ही तुच्छ बुधी बनाया है। अब बाप कहते है मैं तुमको स्वच्छ बुधी बनाता हूं। ज्ञान का घी डालता हूं। है यह भी समझाने की बातें। ज्ञान और योग दोनो अलग चीजें हैं। योग को ज्ञान नही कहेंगें। कोई समझते हैं भगवान नें यह भी आकर ज्ञान दिया नां कि मुझे याद करो। परन्तु इसको ज्ञान नही कहेंगें। यह तो बाप और बच्चे है। बच्चे जानते हैं कि यह हमारा बाबा है। इसमें ज्ञान की बात नही। ज्ञान का तो विस्तार है। यह तो सिर्फ याद है। बाप कहते हैं मुझे याद करो बस, यह तो कामन बात है। इनको ज्ञान नही कहा जाता। बच्चें नें जन्म लिया सो तो जरूर बाप को याद करेगा। ज्ञान का कितना विस्तार है। बाप कहते है मुझे याद करो। यह ज्ञान नही हुआ। तुम खुद जानते हो हम आत्मा है, हमारा बाप परम-पिता परमात्मा है। इनको ज्ञान कहेंगें क्या? बाप को पुकारते है जैसे बच्चे पुकारते है। ज्ञान तो है नालेज। जैसे कोई एम, ए, पढ़ते है। कोई बी, ए पढ़ते है। कितने ढेर किताब पढ़ने होते हैं। अब बाप तो कहते है तुम हमारे बच्चे हो नां। मैं तुम्हारा बाप हूं। मेरे से ही योग लगाओं। अर्थात याद करो। इसको ज्ञान नही कहेंगें। तुम बच्चे तो हो ही। हम आत्मायें कभी विनाश नही होती है। कोई मर जाते हैं तो उनकी आत्मा को मंगाते है। अब वो शरीर तो खत्म हो गया। आत्मा भोजन कैसे पावेगी। भोजन तो फिर भी ब्राहम्ण खावेंगें। परन्तु यह सब है भक्ति मार्ग की रस्म। ऐसे नही कि हमारे कहनें से यह भक्ति मार्ग कभी बन्द हो जावेगा। वो तो चलता ही आता है। आत्मा तो एक शरीर छोड़ कर जाकर दूसरा लेती है। परन्तु यह रस्म रिवाज चलते आते है। अब यह रस्म रिवाज आये कहां से? वास्तव मे तो रीयल बात यहां ही की है। हम आत्माओं को बुलाते हैं नां। बाप आत्माओं को बुलाते हैं यह समझानें लिये बिगुल ज्ञान मे आते थे नां। तुमको कितना समझाया था कि बाप को याद करो पवित्र बनो। फिर भी नां माना। अब तुम्हारा पद भ्रष्ट हो गया। आगे जो मरे थे फिर भी बड़े हो कोई 20, 25 के ही हुये होंगें। ज्ञान भी ले सकते है। अभी कोई मरेंगें तो बाकी है नां दस बर्ष अब तो ज्ञान ले नही सकेंगें। यथार्थ रीती बाप को याद भी नही कर सकेंगें। बहुत करके इतना कहेंगें शिव बाबा को याद करो। यां कोई फुर्त बच्चा होगा तो 84 के चक्र को समझ जावेगा। अभी बच्चे जानते हैं हम बाप को याद करनें से तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगें। बाप कहते है मुझे

याद करो। यह ज्ञान नही। यह तो बाप डायरेक्शन देते है। इनको योग कहा जाता। ज्ञान है सृष्टी का
चक्र कैसे फिरता है इसका नालेज। और योग अर्थात याद। बच्चों का फर्ज है बाप को याद करना। वो है सब
लौकिक, यह है पारलौकिक। बाप कहते है मुझे याद करो। तो ज्ञान अलग चीज हो गई। बच्चों को कहना पड़ता
है क्या कि बाप को याद करो? लौकिक बाप तो जन्मते ही याद रहता है। यहाँ बाप की याद दिलानी
है दिलानी पड़ती है। इसमें मेहनत लगती है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यह बहुत
मेहनत का काम है। तब बाबा कहते है यादमें ठहर नही सक्ते है। सब लिखतेहै बाबा याद में भूल
जाते है। ऐसे कोई नही कहते ज्ञान भूल जाते है। ज्ञान तो बहुत सहज है। याद को ज्ञान नही कहा जाता
है। इसमें माया के तूफान बहुत आते है। भल ज्ञान में कोई बहुत तीखा हो मुरली भी बहुत अच्छी
चलाते है परन्तु बाबा पूछते हैं याद का चार्ट रखो। कितना समय याद करते हो। बाबा को याद का चार्ट
यथार्थ रीती बना कर दिखाओ। पावन बनने लिये याद ही है। राजाई पाने लिये ज्ञान है। मुख्य है पावन
बनना। इसमें ही माया का विघ्न पड़ता है। शिवभगवानोवाच्य यादमें बच्चे बहुत कच्चे है। अच्छे-2 बच्चे जो
मुरली तो बहुत अच्छी चलाते है परन्तु याद में बिलकुल कमजोर है। योग से ही विकर्म विनाश होने है।
कर्म इन्द्रयों की जो चचंलता होती है वो भी योग से ही शान्ती होती है। एक बाप के सिवाय और कोई
याद नही रहेगा। कोई की देह की याद नही रहेगी। आत्मा जानती है यह सारी दुनिया खलास होनी
है। अब हम जाते हैं अपने घर। फिर आवेंगें राजधानी में। यह सदैव बुधी में रहना चाहियें। ज्ञान जो
मिलता है वो आत्मा में रहना चाहिये। बाबा तो है योगेश्वर जो याद सिखाते है। वस्तव में ईश्वर को
योगेश्वर नही कहेंगें। तुम योगेश्वर हो। ईश्वर बाप कहते है मुझे याद करो। यह याद सिखाने वाला
ईश्वर बाप है। वो निराकार बाप शरीर द्वारा सिखाते है। बच्चे भी शरीर द्वारा सुनते है। कई तो योगमें
बहुत कच्चे है। बिलकुल याद करते ही नही। जो भी जन्म जन्मान्तर के पाप है सभी की सजायें खावेंगें। यहाँ
आकर जो पाप करते है वो तो और ही सौ गुनी सजायें खावेंगें। शास्त्रों में ताम्रध्वज मोरध्वज की कथायें है।
बाप के पास आकर फिर जो पापात्मा बनते है यह उनके लिये है। ज्ञान की तीक-2 तो बहुत करते
है? योग बिलकुल है नही। जिस कारण पाप भस्म हो नही सक्ते। बच्चे ही रह जाते है। इसलिये सच्ची-2
माला अठ की ही बनी है। रत्न गाये जाते है। 108 रत्न कभी सुने है? 108 रत्नों की कोई चीज नही
बनाते हैं। रत्न कहते है। बच्चों को फिर भीपुरुषार्थ करना है। बहुत है जो इन बातों को पूरा समझते नही
है। याद को ज्ञान नही कहा जाता। ज्ञान सृष्टी चक्र को कहा जाता है। वो सभी शास्त्र है भक्ति मार्गके।
बापखुद कहते है मै इनसे नही मिलता हूँ। इन साधुओं आद सबका उधार करने मैं आता हूँ। वो समझते
है ब्रहम में लीन होना है। मिसाल देते है फिर पानी के बुदबुदे का। अभी तुम ऐसे नही
कह सक्ते हो तुम तो जानते हो हम आत्मायें है शिव बाबा के बच्चे। मामेकम् याद करो यह
अक्षर भी कहते हो परन्तु अर्थ कुछ नही समझते। भल कह देते है हम आत्मा है। आत्मा क्या परमात्मा
क्या यह ज्ञान बिलकुल नही है। यह बाप ही आकर सुनाते है। अभी तुम जानते हो हम आत्माओं का
घर वो है। वहाँ सारा सिजरा है। हर एक आत्मा को अपना-2 पार्ट मिला हुआ है। बाकी भक्ति तो कोई
काम की नही है। बाप कहते है यह सभी फालूत बातें हैं। भक्ति मार्ग है रावण राज्य। भक्ति कल्ट। आधा
कल्प भक्ति चलती है। अन्धेरे में ठोकरें खाते दुर्गती को पाते हैं। नही तो भक्तों भगवान को कौन याद करते।
सत्तयुग में वहां सुख ही है तो कोई भी याद नही करते हैं। सुख कौन देते है दुख कौन देते हैं यह
भी कोई को पता नही है। भक्ति है ही रात ज्ञान है दिन। 63जन्म तो धक्के खाते होफिर ज्ञान देता
हु कितना समय लगता है? सैकिन्ड्। यह तो गाया हुआ है सैकिंड में जीवनमुक्ति। यह तुम्हारा बाप है ना।
वो है पतित-पावन। उनको याद करने सें तुम पावन बन जावेंगें। सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग यह चक्र

है। नाम भी जानते हैं परन्तु पत्थर बुधी ऐसे है तो टाईम का किसीको भी पता नही। समझते भी है यह घोर कलियुग है। अगर कलियुग अजन और भी चलेगा तो कितना घोर अन्धेरा हो जावेगा। इसलिये गाया हुआ है कि कुम्भकरण की नींद में सोये हुये थे। और विनाश हो गया। थोड़ा भी यह ज्ञान सुनते है तो प्रजा बन जाते है। कहां यह ल.न. कहां प्रजा। पढ़ाने वाला तो एक ही है। हर एक की अपनी-2 तकदीर है। कोई तो स्कालरशिप ले लेते है। कोई फैल हो जाते है। राम को बाण की निशानी क्यूं दी है? क्यों कि नापास हुआ। रावण से डरा इसलिये क्षत्री कहते है। यह भी गीता पाठशाला है। कोई तो कुछ भी मार्क्स लेने लायक नही है। मैं आत्मा बिन्दी हूं, बाप भी बिन्दी है, ऐसे उनको याद करना है इस बात को समझते भी नही। वो क्या ऊंच पद पावेंगें। याद में नां रहने से बहुत घाटा पड़ जाता है। याद के बल से कर्म इन्द्रय बिलकुल शान्ती को पाती है। ज्ञान से शान्ती नही होगी। योगबल से शान्त होंगी। भारतवासी पुकारते है आकर हमको वो ही गीता का ज्ञान सुनाओं। अब कौन आवे? कृष्ण की आत्मा तो यहां है। कोई आकाश सिंघासन पर थोड़ेई बैठी है जिनको बुलाते है। अगर कोई कहे हम क्राईस्ट की आत्मा को याद करते है, अरे- वो तो यहां धक्के खाते रहते है। उनको क्या पता कि क्राईस्ट की सोल यही है। वापस जाये नही सकते। ल.न. पहले नम्बरवालों को ही 84जन्म लेने है। तो और फिर वापस कैसे जा सकते है। यह सब हिसाब है नां। मनुष्य तो जो कुछ बोलते है सो ही झूठ। आधा कल्प है झूठ खण्ड, आधा कल्प है सचखंड। अब तो हर को समझना चाहिये कि हम नर्कवासी है। फिर स्वर्गवासी भी भारतवासी ही बनते है। मनुष्य कितने वेद शास्त्र उपनिषद आद पढ़ते है। क्या इससे मुक्ति को पावेंगें? उतरना तो है ही। हर चीज सतो रजो तमो में जरूर आती है। न्यू वर्ल्ड किसको कहा जाता है यह भी किसीको पता नही है। नां ही प्राईम्निस्टर प्रेजीडेन्ट आद जानते है। नां साधु सन्त आद जानते है। किसीको भी यह ज्ञान नही है। यह तो बाप सम्मुख बैठ समझाते है। देवी देवता धर्म की किसने स्थापना की भारत वासियों को कुछ भी पता नही है। तो बाप ने समझाया ज्ञान में भल कितने भी अच्छे है परन्तु योग में नापास है सभी। अच्छे-2 महारथी भी योग में कच्चे है। वाणी में बहुत तीखे है। बाप कहते है वो भी जैसे पण्डित ठहरे। योग नही तो विकर्म विनाश नही होंगें। ऊंच पद नही पावेंगें। जो योग में मस्त है वो ही ऊंच पद पावेंगें। उनकी कर्मइन्द्रियां बिलकुल ठण्डी हो जावेगी। देह सहित सब कुछ भूल देही अभिमानी अकेले बन जाते है। हम अशरीरी है। अब जाते है घर। उठते बैठते ही समझो अब यह शरीर तो छोड़ना है। हमनें पार्ट बजाया अब जाता हूं घर। ज्ञान तो मिला जैसे बाप में ज्ञान है उनको तो किसीको यादनही करना है। याद तो तुम बच्चों को करना है बाप को। उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। योग का सागर तो नही कहेंगे नां। चक्र का नालेज सुनाते है और अपना भी परिचय देते है। याद को ज्ञान नही कहा जाता, याद तो बच्चों को अपने आप ही आ जाती है। याद तो करना ही है। नही तो वर्सा कैसे मिलेगा। बाकी है नालेज। हम 84जन्म कैसे लेते है तमोप्रधान से सतोप्रधान फिर सतोप्रधान सेतमोप्रधान कैसे बनते है यह बाप समझाते है। फिर सतोप्रधान बनते है बाप की याद से। यह बाप ही याद दिलाते है हम तुम्हारा रूहानी बाप हूं। तुम आये हो रूहानी बाप पास उनको शरीर का आधार तो चाहिये नां। कहते है मैं बूढ़े तन में प्रवेश करता हूं। है भी वानप्रस्थ अवस्था। गाया हुआ है ब्रह्मा की 100वर्ष आयु। तो भी बाकी 9, 10वर्ष है। शरीर तो सदा नही रहता है। शरीर चला जावेगा तो बाबा भी चला जावेगा। फिर यह भी जैसे खोखा बन जावेंगें। अब बाप है तब ही सारी सृष्टी का कल्याण होता है। यह है भाग्यशाली रथ। इनसे कितनी सर्विस होती है। फिर शरीर खोखा बन जाता है। तो इस शरीर का भान तोड़ने लिये याद चाहिये। इसमें ज्ञान की बात नही। जास्ती याद सिखानी है। ज्ञान तो सहज है। छोटा बच्चा भी सुना देगा। याद में ही मेहनत है। एक की याद रहे यह है अव्यभचारी याद। शरीर को याद करना है व्यभचारी याद। ज्ञान से तो सब याद आते है। याद से सबको भूल अशरीरी बनना होता है। ओम